ISSN NO.2395-0692

IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

चित्रकूट के प्रमुख पर्यटन स्थल : एक भौगोलिक विवेचन

रमाकान्त द्विवेदी * , अजय कुमार सिंह**

**सहायक प्रध्यापक, भूगोल, एस.आर.एस. पी.जी. कालेज, नरैनी बॉदा, उत्तर प्रदे"ा*

*** भाोध छात्र, भूगोल, ए.पी.एस. वि"वविद्यालय, रीवां, मध्य प्रदे"ा*

सरांश

पर्यटन प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक भू–दृ" य होते हैं, जिन्हें मानव समुदाय देखना पसंद करते हैं, प्राकृतिक भू–दृ" यों में नदी, पहाड़, गुफाऐं, झरनें जलवायुविक् प्रदेश, जंगल एवं वन्य जीव–जन्तु आदि तथा सांस्कृतिक भू–दृ" य में मेंले, लोकाचार, नवाचार, भिक्षा आदि सम्मलित होते हैं। भाोधार्थी का अध्ययन क्षेत्र चित्रकूट के पर्यटन हैं जहॉ प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक दानों ही भू–दृ" य बहुलता से देखने को सहजता ही मिलते हैं। चित्रकूट क्षेत्र का ही नहीं वरन् देश का प्रमुख तीर्थ क्षेत्र हैं जो कालान्तर में सुखद पर्यावरण का तीर्थ एवं वैदिक ज्ञान तथा साहित्य का स्रोत भी था। चित्रकूट बुन्देलखण्ड़ के भू परिक्षेत्र का भाग है।

संकेत भाब्द : चित्रकूट– चित्रकूट एक पवित्र भू भाग है, जिसका वर्णन रामचरित मानस पर चित्रकूट भाब्द 11 बार मिलता है। **पर्यटन**– पर्यटन भाब्द हिन्दी भाशा भाब्द की देन है, जो देशपर्यट से बना है, जिसका अर्थ है चारो तरफ घूमना है।

प्रस्तावना

पर्यटन के बिना मान ज्ञान का विस्तार सम्भव नहीं है, इसके अभाव में ज्ञान किताबी ज्ञान मात्र बन कर रह जाता है।

पर्यटन वह स्थल है जहॉ पर्यटकों का आवागमन उस भूमि के क्षेत्र में अधिक होता है। मानव जीवन की सम्पूर्ण क्रियायें उस पर्यटन परिधि में होती हैं जो प्रकृति के उपर दबाव बनाने में सफल रहती है, जिस कारण वहॉ की प्रकृति का संतुलन बिगड ने लगता है, जिससे पर्यावरण प्रदूशण उत्पन्न होने लगता है। वैसे तो पर्यटन को धुँआं रहित उद्योग की संज्ञा प्राप्त है परन्तु पर्यटन का संचालन प्रद्शण से ही प्राम्भ होता है। कोई भी व्यक्ति जब पर्यटन के लिए निकलता है तो वह पहले यातायात के साधनों का प्रयोग करता है तो उसके घर से लेकर पर्यटन स्थल तक यातायात साधन द्वारा वायु प्रदूशण एवं ध्वनि प्रदूशण तथा खान–पान उद्योग एवं सौन्दर्य प्रसाधन वस्तुओ व ठहराव अर्थात होटलिंग द्वारा जल प्रदूशण अधिक होता है। पर्यटन उद्योग विदेशी मुद्रा प्राप्त कर व घरेलू मुद्रा अर्जन कर देश की आय को बढ़ाता है, तो वहीं क्षेत्रीय पर्यावरण से छेड़–छॉड़ कर प्रदूशण जैसी समस्या बढ़ाता है।

पर्यटन उद्देश्य

प्रस्तुत भाोध का प्रमुख उद्देश्य चित्रकूट के पर्यटन स्थलों पर सुखद वातारण को बनाये रखना और मानवीय आन्नद की प्राप्ति हेतु उपाय सुझाना है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य अग्रलिखित हैं–

1– पर्यटन का उद्देय पर्यटक द्वारा तनाव मुक्त व आराम एवं आन्नद पूर्ण समय विताने के साथ–साथ ज्ञान प्राप्ति के लिए पर्यटन पर निकलना है।

www.ijahms.com

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

2– देशाटन उद्देश्य हेतु पर्यटक मुख्यतः अपने देश के बाहर की यात्रा करता जिससे आर्थिक लाभ, ऐतिहासिक ज्ञान विस्तार, संस्कृति का विकास आदि लाभ मिल सके।

3– तीर्थाटन में पर्यटक मुख्यतः अपने धार्मिक उद्देश्यों कि पूर्ति को प्राप्त करता है।

विधि–तन्त्र एवं समंक

विगत दशकों में भौगोलिक अध्ययनों का विधि–तन्त्र सामान्य से अधिक वैज्ञानिक एवं मात्रात्मक हो गया है। जिससे भूगोल के उद्दे" य एवं क्षेत्र में परिवर्तन सम्भव हुआ है। भौगोलिक समस्याओं के समाधान में गणितीय एवं सॉख्यिकीय विधियों के प्रयोग तथा कम्प्यूटर संगणकों की सुविधा ने भूगोल के स्वरूप को बदल दिया है, जिससे भूगोल तथा सामान्य विज्ञान का स्वरूप एक हो गया है। विद्वान अकरमन 1958 ने बताया कि यद्यपि भूतकाल में भौगोलिक वितरणों के विश्लेशण में सरलतम सॉख्यिकी का उपयोग किया जाता था, किन्तु आज भूगोल विशय जटिलतम सॉख्यिकीय विधियों एवं पूर्ण तार्किक, विकास की ओर उन्मुख है।

प्रस्तुत भाोध में विशय की दुरूह एवं उद्दे" यों कि पूर्ति की सार्थकता के लिए प्राथमिक एवं द्वितीय ऑकड़ों का प्रयोग किया गया है। ये ऑकड़े भाोध संस्थाओं, प्रशासनिक कार्यालयों, जनपद मुख्यालय, विभिन्न प्रकाशकों के माध्यम से प्राप्त किये गये हैं। जिन क्षेत्रों एवं पर्यटक स्थलों की वास्तविक सूचनाएं द्वितीयक स्रोतों से उपलब्ध नहीं हो सकी हैं, उनके लिए प्राथमिक ऑकड़ों का सृजन किया गया है। इस हेतु क्षेत्र का सर्वेक्षण एवं प्रश्नावली विधि का भी सहारा लिया गया है। अध्ययन की वास्तविकता जानने के लिए फोटोग्राफी तकनीकि एवं साक्षात्कार पद्धित का भी सहारा लिया गया है।

स्थिति एवं विस्तार

अध्ययन क्षेत्र उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड़ के चित्रकूट धाम मण्ड़ल बॉदा में उवस्थित है, जो मानचित्रानुसार चतुश्कोणीय आकृति में धरातल की सीमा बनाता है, जो वि" व भू–पटल पर कर्क रेखा के उत्तर 24^0 $24^{\prime}$ से 25^0 $12^{\prime}$ उत्तरी अक्षांश तथा 80^0 $58^{\prime}$ से 81^0 $34^{\prime}$ पूर्वीदेशांतर के मध्य विस्तृत है, उत्तर से दक्षिण 58 किमी0 लम्बा तथा पूर्व से पश्चिम 62 किमी0 चौड़ा है तथा कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 3164वर्ग किमी0 है, जो देश के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 0ण्996ः ए राज्य का 1ण्31ः ए बुन्देलखण्ड का 10ण्755ः तथा चित्रकूट धाम मण्डल बांदा 21ण्40ः है। जनपद की भौगोलिक सिमांकन भ–मानचित्र एवं क्षेत्रफल तथा जनसंख्या सारणी संख्या एक में स्पश्ट है।

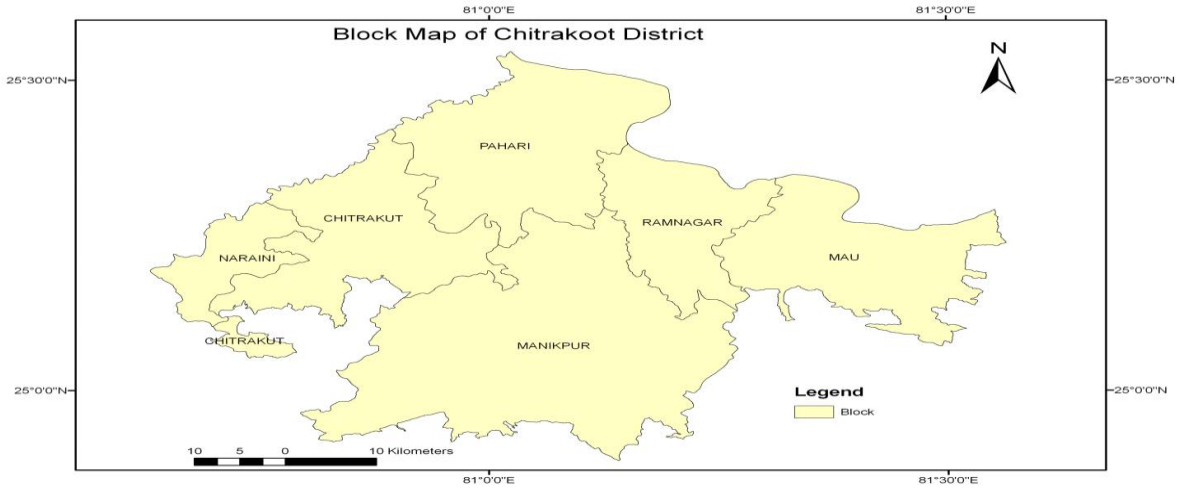

सरणी संख्या– 1ण्1 बुन्देलखण्ड़ ;उत्तर प्रदे"द्ध भौगोलिक प्रदे"ा का क्षेत्रफल जनपदवार

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

बुन्देलखण्ड़ ;उत्तर प्रदेशद्ध प्रदेश के जनपदो का नाम	बुन्देलखण्ड़ ;उत्तर प्रदेशद्ध प्रदेश के जनपदो का भौगोलिक क्षेत्रफल	जनसंख्या गणना वर्श 2011
झॉसी	5,024 वर्ग किलोमिटर	1998603
ललितपुर	5,039 वर्ग किलोमिटर	1221592
जालौन	4,565 वर्ग किलोमिटर	4494204
बॉदा	4,460 वर्ग किलोमिटर	1799410
हमीरपुर	4,282 वर्ग किलोमिटर	1104285
महोबा	2,884 वर्ग किलोमिटर	875958
चित्रकूट धाम	**3,164 वर्ग किलोमिटर**	**991730**
योग–बुन्देलखण्ड़ प्रदेश एवं चित्रकूट धाम मण्ड़ल बॉदा	29,418 वर्ग किलोमिटर 14,790 वर्ग किलोमीटर	11381497 4771383

स्रोत भारत 2006

उपरोक्त सारणी से स्पश्ट होता है कि बुन्देलखण्ड़ क्षेत्र में क्षेत्रफल कि दृश्टि से झॉसी सबसे बड़ा जनपद है, जिसका क्षेत्रफल 5,024 वर्गकिलोमीटर है वहीं में चित्रकूट जनपद का छठा स्थान है, जिसका क्षेत्रफल 3,164 तथा प्रदे” ा का सबसे छोटा जनपद महोबा है, जिसका क्षेत्रफल 2,884 वर्गकिलोमीटर है। चित्रकूट धाम मण्ड़ल बॉदा में चित्रकूट जनपद का तीसरा स्थान है, मण्ड़ल में बॉदा प्रथम, हमीरपुर द्वितीय तथा चतुर्थ स्थान महोबा का है, महोबा चित्रकूट धाम मण्ड़ल का सबसे छोटा जनपद है। उत्तर प्रदेश के न्यूनतम जनसंख्या वाले जनपदों में महोबा, चित्रकूट तथा ललितपुर सम्मलित हैं।

सापेक्ष स्थिति

अध्ययन क्षेत्र चित्रकूट झांसी से 295 किमी0, इलाहाबाद से 120 किमी0, कानपुर से 290 किमी0 तथा सतना से 79 किमी0, रीवा से 105 किमी0 एवं मण्ड़ल मुख्यालय बांदा 73 किमी0 तथा राजधानी दिल्ली 557 किमी0 और राज्यराजधानी लखनऊ 327 किमी दूर अवस्थित है।

चित्रकूट धाम के प्रमुख पर्यटक स्थल

चित्रकूट वन संपदा, जल संपदा, उच्चावच प्रभाव, पर्वत एवं उसपर उर्मिल मैदान, झरनों, कार्स्ट भू–आकृति का अद्भुत नमूना जो नि” :चुता” म और चुता” म आकृति देखी जा सकती है। जीव–जन्तुओं के साथ मठ एवं मन्दिर और प्रतिमाओं तथा सांस्कृतिक–चेतना का अनोखा केन्द्र है। प्राकृतिक सुन्दरता एवं श्री राम की अभिव्यक्ति को तलासने के लिए चित्रकूट–यात्रा का सिलसिला आर्यावर्त के कोने–कोने से अनादि काल से भ्रारू हुआ था, वह अभी जारी है और बढ़ती जनसंख्या के साथ जारी रहेगा। चित्रकूट धाम एक आरण्यक तीर्थ है, अपनी प्राकृतिक वन संपदा के बीच जगह–जगह पर रमणीय एवं द” नीय स्थल प्रदान किये हैं, जो अपनी पवित्रता के लिये सदियों से सुदूर तक विख्यात हैं। चित्रकूट अध्यात्म, सांस्कृतिक एवं पर्यटन की दृश्टि से महत्वपूर्ण हैं। चित्रकूट

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

धाम में धार्मिक स्थलों की बहुलता है, फिर भी कुछ अन्य दर्यानीय स्थल हैं जो ऐतिहासिक और पुरातात्विक महत्व के हैं। यहॉ धार्मिक स्थलों कि संख्यां अधिक है जो पूर्णतः प्राकृतिक हैं। चित्रकूट का प्रथम दर्शन रामघाट और मत्यगयेन्द्रनाथ से प्रारम्भ होता है। प्रमुख दर्शनीय स्थल यथा– रामघाट, पर्णकुटी, कमतनाथ पर्वत, चक्रतीर्थ, भरत मिलाप, लक्ष्मण पहाड़ी, राम" य्या, हनुमान धारा, स्फटिक शिला, सीता कुण्ड़, सती अनुसुइया आश्रम, गुप्त गोदावरी, गणेश बाग, रामनगर का चंदेल कालीन तालाब और स्मार, मड़फा दुर्ग, कोठी तालाब, मराठों की गढ़ी, उदल की गढ़ी आदि जनपद के पर्यटन मानचित्र में चित्र संख्या 3ण्1.3ण्2 में जनपद के भू–पत्रक अनुसार अंकित किये गये हैं। प्रथम मानचित्र में सम्पूर्ण चित्रकूट ;उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेशद्ध ओर दूसरे मानचित्र में मध्य प्रदेश के दर्शनीय स्थल अंकित हैं।

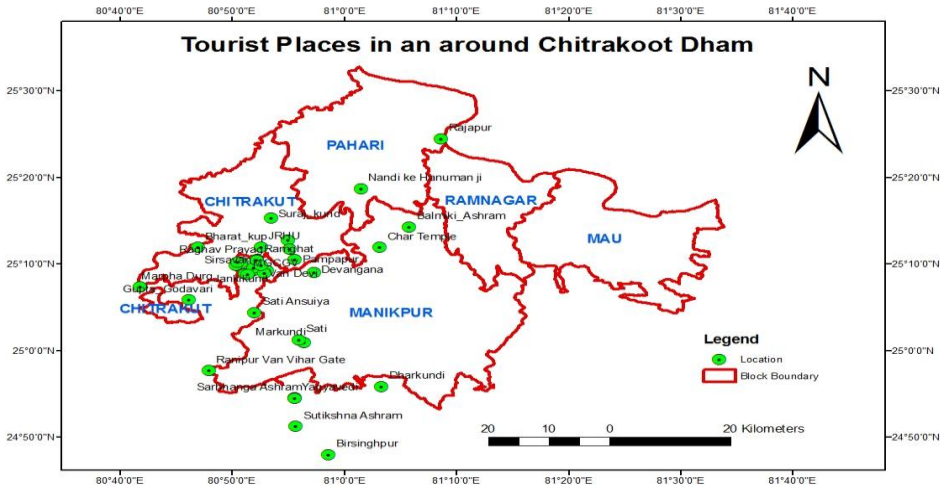

भौगोलिक सूचना प्रणाली से निर्मित मानचित्र

मत्यगयेन्द्रनाथ मन्दिर– विविध धर्म ग्रन्थों में लिखा है कि यह भूमि देवों की साधना स्थली रही है। इसी को साक्ष्य मानते हुए इस क्षेत्र में ब्रम्हा जी ने एक यज्ञ किया और यज्ञ की रक्षा के लिये एक द्वारपाल नियुक्त किया जो एक लिंग के रूप में थे, जो आगे चित्रकूट के महाराजाधिराज कहलाये जिन्हें मत्यगयेन्द्रनाथ के नाम से जाना जाता है। मुनि भरद्वाज ने श्री राम से कहा था कि चित्रकूट के राजाधिराज से आज्ञा पाकर चित्रकूट में वास करें। इसी आदेश का अनुसरण कर श्री राम ने भाई लक्ष्मण से कहा कि राजाधिराज से आग्रह कर यहॉ निवास के लिये अनुमति ले। तभी श्री राम चित्रकूट में रूके थे तथा रूद्राभिशेक किया था जो प्रथम शिवलिंग कहलायें, द्वितीय शिवलिंग के रूप में अत्रि मुनि ने श्री राम दर्शन प्राप्ती के लिये स्थापित किया था, तीसरा शिवलिंग स्वयं श्री राम ने वनवास काल में स्थापित किया तथा चौथा शिवलिंग को रावण ने सोने की लंका प्राप्त होने के बाद स्थापित किया था। पन्ना नरे" ा अमान सिंह ने मन्दिर का निर्माण कराया था। यह स्थल पवित्र मंदाकिनी के तट पर स्थित है, यहॉ श्रद्धालुओं की अपार भीड़ बनी रहती है, यहॉ प्रतिदिन दस हजार से अधिक लोग पहुचते हैं।

राम घाट– रामघाट मंदाकिनी ; पयस्विनी द्ध नदी के तट पर स्थित एक श्रद्धालुओं एवं यात्रियों के लिए एक बड़ा पवित्र स्थल है। सांध्य काल में यह स्थल वाराणसी का गंगा घाट व हरिद्वार की हरकीपौंड़ी से कम दृश्यमान नहीं होता। इस घाट में श्री राम ने तुलसी दास को दर्शन दिये इसी सन्दर्भ में दोहा प्रचलित है–

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

चित्रकूट के घाट पर भई संतन की भीर,

तुलसीदास चंदन घिसे तिलक करें रघुवीर।

रामघाट भू–पत्रक सीट संख्या में स्पश्ट दिखता है। यह घाट मंदाकिनी नदी का सबसे गहरा व चौड़ा क्षेत्र है। यहॉ से लगे मन्दिरों के समूह को पुरी कहते हैं यहॉ से लेकर परिक्रमा मार्ग के मन्दिर समूह सम्मलित है।

पर्णकुटी– पर्णकुटी श्रीराम, सीता और लक्ष्मण के निवास की एक मनोहर कुटी थी, मंदाकिनी सरिता कुटी को और मनोहर बनाती है। इस कुटी पर श्रीराम भरत आगमन के पूर्व तक निवास करते थे। यह स्थल रामघाट के पास है, इसका रामायण में मनोहर वर्णन मिलता है।

कामतनाथ– चित्रकूट के प्रमुख आकर्शण दो ही हैं जिनमें एक कामतनाथ तथा दूसरा मंदाकिनी हैं। इस पर्वत की वनस्पतियॉ कभी सूखी नहीं हैं। इसी पर्वत की श्री राम ने वनवास काल में अपनी कामना पूर्ति के लिए पूजा–अर्चना की थी। यह 5 वर्ग किलोमीटर वर्गाकार एवं वृत्ताकार है जो चित्रकूट धाम के प्राण हैं, यह मंदाकिन नदी रामघाट से 1ण्5 किलोमीटर दूर है। यह भांक्कवाकार पहाड़ी समुद्र तल से लगभग 1800 फीट उॅचा है। इस पर्वत की वि" ोशता यह है कि इसको चाहे–जहॉ से भी देखें यह धनुशाकार नजर आयेगा। यह पर्वत स्थल शिव धनुश से जुड़ा है, जिसकारण यह धनुशाकार होगया है। इस गिरि को महर्शि वाल्मीकि, महाकवि कालीदास तथा संत कवि तुलसी दास ने अपने भाब्द वाण स अलौकिक कर दिया है।

कामदगिरि भे रामप्रसादू

अवलोकत अपहरत विशादू।

इस पर्वत के दर्शन के लिए प्रतिमाह की अमावस्या, पूर्णिमा, चैत्र रामनवमी और दीप–दान अमावस्या ;बड़ी अमावस्याद्ध को बुन्देलखण्ड़ प्रदेश के ही नहीं वरन् देश के कोने–कोने से कई लाख ; इन विषेश पर्वा पर 25 से 30 लाख यात्री पहुॅचता है द्ध यात्री चित्रकूट पहुॅच कर कामतनाथ पर्वत की परिक्रमा करते हैं। पर्वत परिक्रमा मार्ग पक्का कंकरीट का बना है जो 3 मील अर्थात 5 वर्गकिमी0 है। परिक्रमा के किनारे–किनारे सैकड़ों देवालय बने हैं जिनमें राममुहल्ला, मुखारविन्द, साखी गोपाल, भरत–मिलाप, पिपरही के बड़े व लेटे हनुमान जी तथा पीली कोठी आदि महत्पूर्ण हैं।

भरत–कूप– भरत–कूप कामतनाथ से 14 किलोमिटर पि" चम दिशा पर स्थित है। यहॉ पर स्थित एक कुऑ जो अत्यन्त विशाल व गहरा है, जिसका जल अकाल पड़ने पर भी नहीं सूखता यही वह एतिहासिक स्थल है जहॉ पर भरत जी श्री रामचन्द्र जी के राज्याभिशेक हेतु समस्त तीर्थों का जल लाये थे परन्तु राज्याभिशेक न होने के कारण गुरू वि" वामित्र द्वारा बताये स्थल पर जल छोड़ा गया है। इसी स्थल के उत्तर में एक बरूआ बांध भी बना है जो अत्यन्त रमणीय है। यहॉ पर भरत व उनकी पत्नी माण्डवी का प्राचीन मन्दिर है। एक दिम्वदन्ती के अनुसार इस स्थन पर यदि कोई रविवार को भरत कूप में स्नान करता है तो सभी तीर्थों के स्नान का फल मिलता है। सांतय इतवार विशेश स्नान का पर्व रहता है जिसमा महत्व और अधिक बढ़ जाता है इस दिन यहॉ दूर–दूर से लगभग 25–30 हजार से अधिक लोग पहुॅचते हैं। यह कुऑ अपने आप में बहुत बड़ी विशेशता रखता है, इसकी विशालता का पता चलता है, कि स्थनीय लोग एवं महन्त बताते हैं कि कूप के समीप एक विशाल पीपल का वृक्ष लगा था एक दिन वृक्ष विना हवा–पानी के अचानक कूप की ओर गिर गया स्थनीय लोगों ने उसे दिन भर कांटा–छांटा फिर भी वृक्ष का बड़ हिस्सा जड़ सहित व कछु तनों सहित रह गया था रात्रि होने के कारण लोगों उसे वहीं छोड़ दिया परन्तु जब स्थानीय लोगों ने वहॉ सुबह देखा तो वहॉ वृक्ष नाम का कोई नाम तक नही था। तभी से वहॉ के महन्त ने कुये पर एक लोहे का जाल

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

डलवा दिया इससे कुये कि गहराई का अंदाजा किया जा सकता है। इस कुऐ की एक विशेशता यह भी है कि इसमें चार घाट बने है परन्तु सब घाटों का जल एक समान नहीं है जो एक आश्चर्य है जिससे पता चलता है कि इस कुऐ में चारों धाम का जल आज भी देखा जा सकता है। इस कूप में नहाने का बड़ा ही महत्व है। यहॉ पर भी सातै इत्वार, आमावस्या, पूर्णिमा, मकर संक्रान्ती, माघ स्नना, कार्तिक स्नान, प्रयाग कुम्भ मेला पर्व आदि पर लाखों से भी अधिक श्रद्धालु पहॅूचते है। यहॉ दैनिक 1000 स अधिक लोग पहॅचते है। यहीं भरत जी का प्राचीन मन्दिर तथा एक संस्कृत पाठशाला भरत जी की स्मृति में संचालित है। यहॉ के सन्दर्भ में रामचरित मानस में लिखा है कि–

भरत कूप अब कहिहहिं लोगा। अति पावन तीरथ जल जोगा।।

प्रेम सनेम निमज्जत प्रानी। होइहहिं विमल करम मन बानी।।

मड़फा दुर्ग–मड़फा भरत–कूप से 10 किलोमीटर पि”म चम दिशा में स्थित है जो धर्म ग्रन्थों के अनुसार यह माण्डव्य ऋशि का आश्रम था इसी माण्डव्य का अपभ्रन्” ा मड़फा बना। यह दुर्ग के नाम से भी विदित है। यह स्थल एक पहाड़ी है जिसमें एक ध्वंसावशेश मात्र एक अति प्राचीन किला जो अर्धनिर्मित है यहॉ का प्राचीन निर्माण में हाथी दरवाजा प्रमुख है जो किले का प्रमुख द्वार के रूप में है। इस पहाड़ का अधिकांश भाग मध्य प्रदेश में है जहॉ पर एक प्राचीन मन्दिर जिसमें कोई देवी–देवताओं की प्रतिमा स्थापित नहीं हो सकी, इसी के पास पाप–मोचन नामक एक प्रसिद्ध सरोवर है। यहॉ एक किमवदन्ती है कि यह दुर्ग कालिंजर काल का है, पन्ना नरेश ने यह भार्तरखी थी कि जो कोई अपने दुर्ग से मशाल जला देगा तो माना जायेगा कि उसका दुर्ग बन गया। इसी भार्त के अनुसार मड़फा और कालिंजर दुर्ग बनने लगे परन्तु कालिंजर के राजगिरि की हांथ से कन्नी गिर जाने से तथा कन्नी खोजने के लिए मशाल जला दी जिसकारण मड़फा में हुआ कि कालिंजर दुर्ग बन गया जिस कारण पन्ना नरेश ने मड़फा दुर्ग का काम रूकवा दिया जिसकारण यह दुर्ग अधूरा रह गया।

मड़फा का मुख्य आकर्शण वहॉ के पन्चमुखी भांकर जी की विााल मुद्रा की प्रतिमा है, यह किमवदन्ती है कि दुर्ग निमार्ण के समय एक चट्टान के तोड़ने से एक विशाल मूर्ति दिखी वह मूर्ति भांकर जी की ही थी। बताते हैं कि राजा रानी भांकर के बड़े भक्त थे। उस मूर्ति के निकलने पर वह मूर्ति किसी से हिली तक नहीं तब भगवान भांकर जी ने राजा–रानी को स्ववन्न में बताया कि राजा–रानी मिल कर एक बार में कहीं पर भी उठाकर मुझे स्थापित कर सकते हैं इस अनुसार राजा–रानी ने मूर्ति उठाई तो वह मूर्ति उठ गयी पर थोडा दूर जाने पर रानी की कांक्ष छूट जाने से मूर्ति थोडी दूर बाद रखदी फिर बताते हैं कि वह मूर्ति किसी भी हालत में पूनः नहीं उठ सकी, जिस कारण मूर्ति अपने प्राचीन मंदिर तक नहीं पहुॅच सकी। इस मूर्ति का प्रमुख आकर्शण यह है कि मूर्ति छोटी दिखती है अन्जान व्यक्ति इस पर जल असानी से चढ़ा सकता है परन्तु यह बात जानने के बाद वहीं व्यक्ति जल असानी से नहीं चढ़ा सकता। इस पहाड़ का एक आकर्शण यह भी है कि इस पहाड़ी पर पंचमुखी वेल की बहुलता है। यहॉ प्रत्येक सावन माह में मेला लगता है जिससे यह दुर्ग और सुन्दर दिखता है।

बेड़ी पुलिया– यह वह स्थान जहॉ श्रीराम माता सीता के लिए बैठ कर बालों में फसाने के लिए बेड़ियॉ बना कर माता को पहनाते थे। अब यह चित्रकूट के रामघाट से 6 किलोमीटर मिर्जापुर–झॉसी राश्टीय राज्यमार्ग संख्या 76 पर स्थित है जो आज बेड़िपुलिया के नाम से जाना जाता है। यहॉ से चित्रकूट धाम कर्वी 6 किलोमीटर, इलाहाबाद 120 किलोमीटर तथा मण्ड़ल मुख्यालय बॉदा 73 किलोमीटर दूर उपान्त है।

सूरज कूण्ड़– यह स्थान रामघाट से 9 किलोमीटर, बेड़ी पुलिया से 3 किलोमीटर तथा जनपद मुख्यालय कर्वी से 9 किलोमीटर दूर है। यहॉ सूर्योपासक महर्शि वैखानस की तपस्या–स्थली है। जहॉ मन्दाकिनी गंगा पि”म चमाभिमुखी हो कर बहती है जो अत्यंत पवित्र मानी जाती है। इसी स्थान पर सूर्य

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

कुण्ड में स्नान करने से जन्मों के पाप नश्ट हो जाते हैं। यहॉ का सबसे बड़ा मेला मकर संक्रान्ति को लगता है जहॉ पर कई हजार लोग पहुॅच कर स्नान आदि करते है।

गणे"ा बाग ;मिनी खजुराहोद्ध– गणेश बाग चित्रकूट से 8 किलोमीटर तथा जनपद मुख्यालय कर्वी से दक्षिण दिशा में मिशन रोड पर 3 किलोमीटर दूर उपांत है। इसका यह प्राचीन गौरव तथा समृद्धि का प्रतीक गणेश बाग पेशवा नरेशों की कीर्ति स्तम्भ को संजोये खड़ा है। इसका निर्माण अन्नीसवीं भाताब्दी के आरम्भ में श्रीमन्त विनायकराव पेशवा ने अपने आमोद–प्रमोद के लिए करवाया था। यहॉ की इमारतों का निमार्ण भारतीय स्थापत्य कला का उत्कृश्ट उदाहरण है। बाग के बीच में प्राचीन भौली का भव्य शट्कोणी पंचमन्दिर है, जिसके उपरी भाग में भित्ति–प्रस्तरों की बारीक कटाई करके खजुराहो की भॉतो देवी–देवताओं की असंख्य मूर्तियॉ उत्कीर्ण की गयी हैं। इन मूर्तियों के बीच में काम–कला के सन्दर्भ में कई सज्ज मूर्तियां हैं। सामने एक सरोवर हैं, जिससे इसकी भोभा और भी बढ़ गयी है। पि"चम भाग में एक बड़ा ही भव्य जलाशय है, जिसमें एक कूप और वापी का सुन्दर सम्मिश्रण है। यह कूप तीन खण्ड़ों में बना हुआ ह और इसके दो खण्ड़ पानी में हमेशा ही डूबे रहते है। गर्मियों में दूसरा खण्ड़ भी खुल जाता है, पर सरकार द्वारा इसे संरक्षित–इमारत घोशित किये जाने के बावजूद सुरक्षा तथा मरम्मत के अभाव में भारतीय शिल्प कला का अद्भुत नमूना धीरे–धीरे जीर्ण–शीर्ण होता हुआ स्मृति–शेश मात्र दिख रहा है।

बॉके सिद्ध– गणेश बाग से 3 किलोमीटर दक्षिण–पूर्व घने वनों से अबाद विन्ध्य पर्वत के पार्श्व भाग में स्थित बॉके सिद्ध अपने प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए प्रसिद्ध है।

प्रथमहिं देवन गिरि गुहा राखी रूचिर बनाय।
राम कृपानिधि कछुक दिन वास करहिंगे आय।

सचमुच यह क्षेत्र देव निर्मित एक सुन्दर कन्दरा है। इसके निमार्ण में भगवती प्रकृति देवी ने अपूर्व चातुर्य दिखाया है। एक विशाल चट्टान के नीचे विस्तृत कक्ष बना हुआ है, जो धरातल से सैकड़ों फीट उॅचा और शिखर से पचासों फीट नीचा है। गुफा तक पहॅचने के लिए नीचे से पक्की सीढ़ियॉ बनी हुई हैं। उपर से निर्मल जल वाला झरना गिर रहा है, जिसका दृश्य बड़ा ही मनोहर है। यह गुफा के उत्तरी भाग को नहलाता हुआ पर्वत के ही वक्ष में विलीन हो जाता है।

कोटितीर्थ– यह रम्य स्थान बॉके सिद्ध से 1ण्5 किलोमीटर दक्षिण इसी पहाड़ पर उपान्त है। इसका दृश्य बॉके सिद्ध जैसा ही लगता है। यहॉ एक झरना भी जो बरसात में और मनोरम हो जाता है तथा इसी पहाड़ पर इसका जल विलीन हो जाता है। यहॉ के सन्दर्भ में एक किदवंती है कि जब श्री राम चित्रकूट आये थे, तब उनके दर्शनार्थ देवलोक से आए हुए करोड़ों देवता इसी स्थान पर रूके थे। जिस कारण इसका नाम कोटतीर्थ पड़ा।

देवांगना घाटी– यह स्थान कोटितीर्थ से 2 किलोमीटर दूर दक्षिण उपान्त है, जो कर्वी से 6 किलोमीटर तथा चित्रकूट से 5 किलोमीटर दूर कोटितीथ पहाड़ पर ही भोभामान है, यह कोटितीर्थ के भॉति ही है। यहॉ के सन्दर्भ में एक किदवंती है कि श्री राम को देखने देव लोक की नारियॉ इस स्थान पर आयीं थीं, जिसकारण इसका नाम देवांगना पड़ा। यह वही स्थान है जहॉ मेनका अप्सरा ने तपस्या की थी। इसका प्रमाण वृहद रामायण में मिलता है।

वाल्मीक आश्रम– यह आश्रम आदि कवि वाल्मीक का है जो कर्वी से इलाहाबाद रोड पर 16 किलोमीटर पूर्व छभ् 76 पर लालापुर ग्राम की एक पहाड़ी पर उपान्त है। यह रामघाट से 24 किलोमीटर दूर पडता है। इस पहाड़ी के नीचे वाल्मीकि नदी ;ओहन नदीद्ध बहती है। चित्रकूट आगमन के पूर्व

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

श्रीराम महर्शि बाल्मीकि से यहीं मिले थे। बाल्मीक जी ने यहीं पर रामायण की रचना की थी। पहाडी के शिखर पर एक मन्दिर है, जिसमें महर्शि वाल्मीकि की प्रतिमा स्थापित है। इसी आश्रम के दक्षिण–पूर्व पार्श्व मार्ग में एक गुफा है जिसमें अनेकों प्राचीन मूर्तियॉ स्थापित हैं। पहाड़ी के शिखर के नीचे तल भाग से कुछ उपर प्रसिद्ध असावर देवी का मन्दिर है, जिनके दर्शनार्थ प्रति सोमवार को मेले का योजन होता है। चैत्र रामनवमी को यहॉ बहुत बड़ा मेला लगता है, जो 4–5 दिन तक चलता है। यह स्थान अत्यन्त रमणीय है यहॉ एक संस्कृत पाठशाला भी स्थापित है।

पूरन बाबा– यह स्थल बरगढ़ के समीप है एक घन घोर जंगल में एक आश्रम है। जहॉ पर प्रत्येक सोमवार को मेले का आयोजन होता है। यहॉ एक सुन्दर झील है जिसका जल स्वच्छ है और कभी सूखता नहीं है। यहॉ से डेढ़ किलोमीटर दूर 16वीं भाताब्दी का एक खण्डहर दुर्ग भी है जो आकर्शण का केन्द्र भी है। यह जनपद मुख्यालय चित्रकूट धाम कर्वी से इलाहाबाद रोड पर 56 किलोमीटर दूर है, यहॉ पर रेलवे स्टे" ान भी है जो कर्वी से इलाबाद लाइन पर बरगढ नाम से स्टेशन भी है।

बिरसिंहपुर– यह स्थान चित्रकूट से 60 किलोमीटर दूर स्थित है यहॉ भगवान गैवीनाथ महादेव का विशाल प्राचीन मन्दिर है। इस शिवलिंग का उल्लेख शिवपुराण में मिलता है। इसके पास एक बड़ा सरोबर है इसी के पास बजार लगता है इसी के पास एक धर्म" ाला भी बना है। यहॉ प्रत्येक सोमवार को मेला लगता है। महाशिवरात्रि पर दिन–रात पूजा–पाठ होती रहती है। इस समय यहॉ लगभग कई हजार लोग प्रतिभाग करते है।

सुतीक्ष्ण आश्रम– यह स्थान बिरसिंहपुर से 20 किलोमीटर दूरी पर स्थित है जो सुतीक्ष्ण मुनि की तपोस्थली है। श्रीराम ने कुछ दिनों तक यहीं निवास किया था।

मारकुण्डी– यह मानिकपुर के पास मारकूण्डी रेलवे स्टेशन के पास स्थित है। यह वन पर्वतों से घिरा हुआ एक स्तब्ध तपोवन है। यहॉ श्रीराम आए थे और सर्वाधिक चित्रकूट का समय यहीं बिताया। साधना के लिए यह सबसे सर्वश्रेश्ठ आश्रम आज भी बना हुआ है।

धारकुण्डी– यह स्थान चित्रकूट से 55 किलोमीटर दूर पर स्थित है। यह पहाड के भीतर से एक फूटती जलधारा कुण्ड में गिरती है। भाायद इसी कारण इसका नाम धारकुण्डी पड़ा। धारा से संलग्न एक कन्दरा वि" ोश द" र्नीय हैं। इसी के पास बेधक स्थान है, जहॉ कभी यक्ष–युधिश्ठिर से प्रश्नोत्तरी में संवाद हुआ था, जिसकी चचा महाभारत में विर्णित है।

ऋशियन– चित्रकूट के पूर्व दिशा में कर्वी–इलाहाबाद मार्ग पर जनपद मुख्यालय से 50 किलोमीटर दूर पूर्व मुरका ग्राम के पास ऋशियन का जंगल स्थित है। भगवान श्री राम मुनि भारद्वाज के आश्रम से चल कर चित्रकूट भूमि पर प्रवेश इसी स्थान से किया था। यह प्राचीन ऋशियों की तपोभूमि है। यहॉ पर्वत को काटकर गुफाऍ बनाई गयी हैं जो अपनी कलात्मकता के लिए विख्यात हैं। एक गुफा से प्रवाहित निर्मल जल स्रोत चित्ताकर्शित करता है जो अपने आप में रम्य है। कहते हैं कि रत्नाकार नामधारी बाल्मीकि को सप्त ऋशियों द्वारा ज्ञान उपदेश यहीं दिया गया था।

त्त उत्थाय ते सर्वे स्पश्ट्वा नध्यः शिवं जलम्।
पन्थानमृशिभिर्जुश्टं चित्रकूट तं ययुः।।

अर्थात सभी जमुना के जल में स्नान कर ऋशि–मुनियों से सेवित मार्ग से चित्रकूट की ओर चले और वाल्मीकि ऋशि के पास गये। भगवान राम जी का स्वागत यहीं बालरूप में हनुमान जी ने किया था। चित्रकूट भगवान शिव की पुरी हैं, भगवान शिव ही हनुमान के रूप में भगवान की सेवा करने के लिए रूद्रावतार में आये थे, अपने पुरी में अपने ईश्टदेव का यहीं दर्शन करने उपस्थि हुए।

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

तेहि अवसर एक तापस आवा।

तेज पुॅज लघु–वयस सुहावा।।

कबि अलखित गति बेश विनागी।

मन क्रमवचन राम अनुरागी।।

चित्रिकूट धाम कर्वी के समीपस्थ मध्य प्रदेश राज्य के दर्शनीय स्थल–

चित्रकूट धाम पर्यटन केन्द्र का निर्माण उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश दोनो ही राज्य मिलकल करते है। जितना सौन्दर्य वास्तव में मध्य प्रदेश का है उतना उत्तर प्रदेश के पर्यटन स्थलों में नहीं, चित्रकूट का प्रमुख आकर्शण कामतनाथ जो उत्तर प्रदेश तथा मध्य प्रदेश दोनो का ही प्रतिनिधित्व करता है। इसी तरह मंदाकिनी का सम्पूर्ण अलौकिक क्षेत्र मध्य प्रदेश के नगर पंचायात चित्रकूट जनपद सतना के अन्तर्गत आता है। इस प्राकर से नगर पंचायत चित्रकूट के अन्तर्गत आनेवाले प्रमुख आकर्शण केन्द्र निम्नवत हैं–

भरत–मिलन– कामदनाथ के परिक्रमा मार्ग के दक्षिण पार्श्व में श्री राम व भरत का अश्रुप्रवाही मिलन हुआ था। इस मिलन में स्वयं पर्वतराज की कठिन शिलाये भी पिघल कर पानी–पानी हो गयी थीं। जहॉ धर्म के समक्ष राजनीति ने मत्था टेका था और कर्तव्य ने वैभव को पैरों तले कुचल राज्य–पद को कन्दुक बना कर इधर–उधर फेंका था। पिघली हुई उन शिलाओं का चिन्हावशेश आज भी उस अपूर्व मिलन की याद दिलाता है।

प्रमोद वन– यह स्थल रामघट से 1 किलोमीटर दक्षिण चित्रकूट–सतना रोड़ पर पयस्विनी तट स्थित है। इसमें रीवां नरे" ा द्वारा बनवाया गया श्री नारायण भगवान का मन्दिर है। इसके चारो ओर लगभग 300 कोठरियॉ बनी हुई हैं, जिनके सम्बन्ध में कहा जाता है कि रीवां रनेश ने किसी दैवी बाधा की भाान्ति के लिए इनका निमार्ण करा कर उतने ही पण्डितों द्वारा किसी विशेश अनुश्ठान का आयोजन किया था। इसी क्षेत्र के ठीक सामने पश्चिम में दास हनुमान नामक स्थान है, जो एक सिद्ध जगह मानी जाती है।

जानकी कुण्ड– प्रमोद वन के कुछ आगे दक्षिण में जानकी कुण्ड़ वर्तमान समय में सर्वाधिक रम्य आश्रम माना जाता है। यहॉ विरक्त महात्माओं की सैकड़ों गुफाये तथा कुटीरें है जहॉ तीन–चार सौ महात्मा सदैव तपस्चर्या करते रहते हैं। इस आश्रम का प्राकृतिक दृश्य बहुत सुहावना है। नीचे मन्दाकिनी छल–छल करती हुई बह रही है। इसके दोनों किनारों पर सघन वृक्षों की सुन्दर कतारें हैं, जो दशक का मन हठात् आकर्शित कर लेती हैं। मंदाकिनी के जल में असंख्य दीर्घकाय मछिलियॉ तैरती रहती है, जो कुछ क्षणों के लिए पर्यटकों के मनोरंजन का साधन भी बन जाती हैं।

यह स्व0 संत श्री रणछोरदास जी महाराज द्वारा स्थापित एक संस्कृत पाठ" ाला तथा रघुवीर जी का भव्य मन्दिर है। यहॉ एक धर्मशाला तथा कई सुन्दर भजनाश्रम बने हुए हैं। स्वामी पंजाबी भगवान् द्वारा निर्मित श्री हनुमान जी का मन्दिर भी विशेश दर्शनीय है।

एक किमदवन्ती है कि वनवास–काल में महारानी जानकी जी यहॉ नित्य स्नान के आती थीं, इसीलिए इसका नाम **जानकी कुण्ड़** पडा।

स्फटिक शिला–यह स्थान जानकी कुण्ड़ से लगभग 1ण्5 किलोमीटर दक्षिण में सघन वृक्षावली से आवृत पयस्विनी नदी के पट पर उपान्त हैं। यह वही स्थान है जहॉ माता सीता को देखने इन्द्र–पुत्र

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

जयन्त ने काक का रूप धारण कर चोंच–प्रहार किया था। यहॉ का प्राकृतिक दृश्य अति आकर्शक, मनोमुग्धकारी और नेत्रानुरंजनकारी है। इस स्थान के सन्दर्भ में रामचरितमानस में एक दोहा है–

एक बार चुनि कुसुम सुहाये। निज कर भूशन राम बनाये।।

सीतहिं पहिराये प्रभु सादर । बैठे फटिक ि"ाला पर सुन्दर।।

श्रामदर्शन– यह स्फटिक शिला से सतना रोड पर 2 किलोमोटर दूर रोड पर महात्मा गॉधी ग्रामोद्य वि" वविद्यालय के सामने समाज सेवी श्री नाना जी दशमुख ने मंगतूराम जयपुरिया कानपुर को प्रेरित कर एक भव्य राम कथा को मूर्ति द्वारा प्रदि" ात कर अद्वितीय चित्राकर्शण कार्य किया। वर्तमान यह चित्रकूट का प्रसिद्ध दर्शनीय स्थल है जो प्राकतिक न हो कर पूरीतरह से मानवीय है।

सती अनुसुइया– यह स्थान रामदर्शन से 8 किलोमीटर दूर दक्षिण पूर्व में स्थित है। यह भूमि हिमालय मुनि अत्रि की है, साहित्यों में उलिखित है कि अत्रि पहले हिमालय में रहते थे फिर वह चित्रकूट पर अपना आश्रम बनाया। एक दिन अत्रि अपनी तपस्या मे बैठे हुए थे उसी समय अपनी पत्नी अनुसुइया से कहते हैं की हमें गंगा का पानी दो तब माता अनुसुइया ने अपने तपोबल से गंगा का आवाहन किया जिससे मंदाकिनी गंगा का उद्गम हुआ। त्रिदेव पूज्य महर्शि अत्रि एवं अनुसुइया की पावन तपोस्थली है। ब्रम्हांण्ड़ की तीनो देवियॉ माता सती का सतीत्व भंग करने के लिए अपने पतियों को अत्रि आश्रम भेजा था। सती सतीत्व भंग करने के लिए व्रम्हा, विश्णू और महेश ने साधू का रूप धारण कर माता से कहा कि भिक्षामिदेहिं तब मांता ने संतों को भिक्षा देने लगी तब संत बोले भिक्षा हम ऐसे नहीं लेत यदि भिक्षा देनी है तो निर्वस्त्र हो कर दे, तब माता ने अत्रि के कमंडल से जल निकाला और उनके उपर छोड़ा तब तीनो देव बालक बन गये और माता ने फिर उन्हें स्तनपान कराया। इस सन्दर्भ के बारे यह दोहा प्रसिद्ध है–

माता अनुसूया ने डाल दियो पालना।

तीन देव झूल रहे बनकर क लालना।।

यह वहीं भूमि है, जहॉ तीनो के अंश से दत्तात्रेय, दुर्वासा और चन्द्रमा की जन्म भूमि बनी। यहॉ पर बने मन्दिर में देव मुनियों की अनेकों मूर्तियॉ हैं व परमहंस आश्रम है। इसी आश्रम के उपर एक पहाड़ी है जो अत्यन्त रमणीय व औशधियों से युक्त है। पहाड़ो के पाश्व से जल की धारायें प्रस्फुटित हैं तथा मंदाकिनी में मिलती हैं। यहीं मंदाकिनी का उद्गम क्षेत्र भी है। इस जल की भाोभा तब और भी बढ़ जाती जब यहॉ पर विभिन्न प्राकर की विभिन्न रंग की मछलियॉ दिखती हैं। इसी आश्रम के पास एक पापमोचनी एक भिाला है, जिसके दर्शन मात्र से विविध पाप नश्ट हो जाते हैं, इस शिला के आगे दरिद्रमोचनी शिला है, जिसके दर्शन मात्र से दरिद्रता नश्ट होती है, आगे और बढ़ने पर गणमोचनी शिला है, जिसके दर्शन से देव–ऋण एवं पितृ–ऋण से मुक्ती मिलती है। ये तीनों शिलाये जल के अन्दर ही हैं।

सरभंगा आश्रम– यह स्थान अत्यन्त जंगलीय है जो अनुसुइया आश्रम से ही कठिन पथरीले मार्ग से होते हुए जाता है जो अत्यन्त दूभर है, यह आश्रम से 10 किलोमिटर दूर आश्रम के पूर्व में उपान्त है। यह स्थल महर्शि सरभंग की तपोस्थली जो रामघाट से पक्के मार्ग से जाने पर 60 किलामीटर दूर पर स्थित है। यहॉ श्री राम आये हुये थे। यहॉ एक निर्मल जल स्रोत है जो आगे जा कर अनुसुइया आश्रम आ कर मंदाकिनी पर जा मिलता है। यहॉ पर एक मन्दिर है जिसके पीछे की पहाडी में अनेक कंदराऐं हैं जिनमें ऋशि–मुनि रहकर तपस्या करते थे। यहॉ के सन्दर्भ म लिखा है कि–

बार–बार गंगा, एक बार सरभंगा।

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

गुप्त गोदावरी– यह स्थान उत्तर मध्य भारत का एक मात्र स्थान जहॉ पर कार्स्ट स्थलाकृति देखने को मिलती है। इस लिए यह एक भौगोलिक दृश्टि व भू–वैज्ञानिक दृश्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थल भी है। यह सति अनुसुइया आश्रम से 8 किलोमीटर दूर उत्तर–पश्चिम स्थित है। यहॉ पर दो विशाल प्राकृतिक अलौकिक गुफाऐं हैं, गुफाओं के अन्दर प्राकृतिक बेल–बूटे और यहॉ बनी आकृतियों का सौन्दर्य अद्भुत है। गुफाओं के अन्दर श्री राम, लक्ष्मण और सीता कुण्ड़ हैं, जिसका स्वच्छ जल प्रवाहित होकर नीचे कुण्ड़ में जाने के बाद गुप्त हो जाता है, जिसकारण इसे गुप्त गोदावरी कहते हैं, गुफा के बाहर प्राचीन गुप्ते" वर भांकर जी की मूर्ति स्थापित है। भाास्त्रों के अनुसार–

प्रथमहि देवन्ह गिरि गुहा, राखी रूचिर बनाय।
रामकृपा निधि, कछु दिन वास करहिंगे आय।।

जनश्रुति के अनुसार श्रीराम वनवासकाल की कुछ घटनायें इसी गुफा से जुड़ी हुई हैं।

इसी गुफा के प्रवेश द्वार पर एक खट–खटा चोर हैं और इसी के अन्दर एक विशाल शिवलिंग है जो दो भू–आकृतिक दृश्टि से कार्स्ट स्थलाकृति है, जो खट–खटा चोर है वह भौगोलिक भाब्द **चुताश्म** है और जो शिवलिंग हैं वह वह **निःश्चुताश्म्** हैं।

सिरसावन– रामायण के अनुसार राम–लक्ष्मण और सीता सिरसावन में स्नान किया था। अब तक यहॉ स्थापित मन्दिर उदासीन मन्दिर के नाम से जाना जाता रहा है। यह उदासीन साधू समाज का आश्रम था, यहॉ राम–लक्ष्मण और जानकी की मूर्तियॉ हैं। लेकिन अब यह आश्रम रावतपुरा सरकार के आधीन है। रावतपुर सरकार द्वारा इस मन्दिर का जीर्णोद्धार करवाकर वहॉ अपना आश्रम बना लिया है। वे यहॉ से कई सामाजिक गतिविधियॉ संचालित कर रहे है।

योगनी शिला– प्राचीन अनुसुइया आश्रम के पा" र्व में यह शिला है जो अनुसुइया के पुत्र दत्तात्रेय की सनातन जन्म भूमि है, जो औघड योगियों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। दक्षिण एवं पूर्वी भारत में इसकी उपासना अधिक की जाती है।

फलकी वन– अनुसुइया आश्रम से पैदल संरभगा जाते समय फलकी वन आता है। पैदल में यह रास्ता अत्यन्त दुर्गम एवं भयानक है व घनघोर जंगल के इसी रास्ते पर जाने पर ऋशभदेव, बदरिका तीर्थ व अमरावती स्थान मिलता है, और आगे जाने पर विराधकुण्ड व पुश्पकरणी सरोवर होते हुए सरभंगा जाया जा सकता हैं सुरक्षा की दृश्टि से यह रास्ता सुरक्षित नहीं हैं। इस रास्ते का प्रयोग सिर्फ साधू–संत ही करते है।

पंच प्रयाग– यह स्थान अनुसुइया जाते समय झूरी नदी जाते समय मिलता है। झूरी नदी के पहले पॉच गंगाऍ मिलती हैं इसीलिए इस स्थान को पंच प्रयाग के नाम से जाना जाता है। यह स्थान अत्यन्त रमणीय है जो पर्यटको को अकर्शित करता है।

सिंहावलोकन– चित्रकूट–सतना मार्ग पर गोदावरी मोड की घाटी के उपर यह स्थान स्थित जो चित्रकूट पर्वत का प्रथम अद्भुत दर्शन होता है, इसे सिंहावलोकन कहते है। लोग गाड़ी में बैठे–बैठे श्रद्धापूर्वक सिंहावलोकन कर चित्रकूट के कामदगिरि पर्वत को हाथ जोड़ कर प्रनाम करते है।

मूरध्वज गुफा– यह वह स्थान जब श्री राम वनवासकाल में खोजते हूए मुनिवर सुतीक्ष्ण से महर्शि अगस्त का आश्रम पूछ रहे थे। यह बात कथावाचको से सुनी हैं, किन्तु वन की विशालता से उनका यह स्थान नहीं जानता। तब मुनिश्रेश्ठ सुतीक्ष्ण ने अगस्त ऋशि का आश्रम यहॉ से एक योजन सोलह कोस में यह स्थान बताया था। इसका वर्णन महाभारत के वनतीर्थ पर्व में आता है।

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

पूर्व मेघ– जनकनन्दिनी श्री जानकी जी के स्नान से पवित्र और सघन छाया वाले वृक्षों से संयुक्त परम पावन स्थान है। यहॉ पर साधु संतो के निवास स्थान बने हैं तथा बड़ी गुफा के नाम से विख्यात स्थान है। जहॉ श्रीराम, लक्ष्मण और सीता जी की भव्य विग्रह मूर्तियॉ विराजमान हैं। इस मन्दिर का निर्माण संत श्री रणछोड़दास जी महाराज ने करवाया था।

सारंग आश्रम– मुनि भरद्वाज के बताये रास्ते पर श्री राम मुनिवर सुतीक्षण से महर्शि आगस्त्य का यह आश्रम पूछ रहे थे। यह बात कथावाचकों से सुनी है, किन्त वन की विशालता से उनका यह स्थान नहीं जानता। तब मुनिश्रेश्ठ सुतीक्षण ने एक योजन सोलह कास में यह स्थान श्री राम को बताया। इसका वर्णन महाभारत के वन पर्व में आता है।

हनुमानधारा– रामघाट से 4 किलोमीटर दक्षिण की ओर विंध्यपर्वत के ऊपर है। यहॉ हनुमान जी की प्राचीन मूरत है, जिसकी बॉई भुजा पर निरन्तर सरस्वती गंगा की निर्मल धारा अनवरत गिरती रहती है और नीचे पहॅूच कर अदृ" य हो जाती है। किमदवन्ती है कि लंका दहन के उपरान्त भारीर की ज्वाला को भाांत करने के लिए हनुमानजी को भगवान् श्री राम ने यह स्थान दिया था। इनका पूजन करने से मनुश्य की सारी बाधऍ दूर होती हैं।

पम्पापुर– इसका पुराना नाम पम्पासर है। इसके पहले इसको सुग्रीव तीर्थ के नाम से जानते थे। सुग्रीव तीर्थ का उल्लेख वृहद रामायण में मिलता है। यह स्थान पूर्व में ऋशि–मुनियों की तपोस्थली रही। यह अत्यन्त रमणीक, प्राकृतिक दृश्टि से अत्यन्त सुन्दर है। वर्तमान समय में यहॉ एक सिद्ध हनुमानजी की मूरत है। यहॉ सन्त प्रेमदासजी साधनारत हैं, जिनका दर्शन वर्श में एक माह होता है तथा भोश मसय वे गुफा में रहकर साधनारत रहते हैं।

उपरोक्त दर्शनीय स्थलों के बाद भी उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश की सीमा में बसे प्रभु श्री राम की भूमि में अशंख देवी–देव दर्शनीय स्थल हैं। यह वह भु–भाग है जहॉ पर रामाणय के सचित्र दर्शन होते हैं यहीं से ही वह दण्डक वन, पंचवटी, पंपासर, माल्यवंत शिखर, सागर सेतु बनाते हुए लंका विजय रणभूमि के लिए अवतरित प्रभ श्रीराम, माता जानकी और भाई लखन अपनी पाठ" ाला का ि" ालान्यास करते है। यहॉ पर देश के खासकर लोग अपनी कामनाओं को लेकर आते हैं और उनको आसातीत बनाते हैं। यहॉ का कामतनाथ परिक्रमा कभी बन्द नहीं होता दिन में लोग पहुॅचते हैं तो रात्रि में साधू–संत अद्रश्य हो कर परिक्रमा करते रहते हैं। यहॉ हजारों मृदंग मधुर ध्वनियॉ निकालते रहते हैं ये ध्वनियॉ पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण दिशा में अविरल रूप गॅूजती रहती हैं। यह भूमि विद्या का पोसित है इसी लिए यह अत्यन्त पिछडा क्षेत्र होते हुए आज यहॉ दो विश्वविद्यालय, दो भव्य चिकित्सालय और कई संस्कृत महाविद्याल अपने ज्ञान–विज्ञान को आकृश्ट कर रहे हैं। परन्तु इन सब पर बढ़ता जनसंख्या का दबाव इस क्षेत्र को अब दूशित कर रहा है। यह प्राकृतिक स्थल अब दूशित हो गये हैं कुछ ही ऐसे दुर्गम क्षेत्र हैं जहॉ मनुश्य नहीं पहुॅच रहा है अब वहीं स्थल ही रम्य बचे है। यहॉ का जल विशैला हो रहा है, मृदा दूशित हो रही है और वायु भी विशैली हो रही है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

i. द्विवेदी रमाकान्त : पधारो हमारे देश बुन्देलखण्ड़, दि इनक्रेडबल यू.पी. अगस्त 2010

ii. भारदा चरणानुरागी : चित्रकूट गौरव गाथा विशेशांक, 2009

iii. पण्डेय उमाशंकर : श्री चिकूट वैभव, 2014

iv. पण्डेय उमा" ांकर : चित्रकूट के बोलते पत्थर, 2014